ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i4.262

जल, स्मृति और संस्कृति: राजस्थान की लोक परंपराओं में जल का सांस्कृतिक भूगोल

सुरेन्द्र सिंह[1], अंजना रत्नू[2], अनमोल सोनी[3]
[1]स्वतंत्र शोधकर्ता, एम.ऐ. हिंदी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
[2]स्वतंत्र शोधकर्ता, पी एच. डी. भूगोल, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
anjanahratnu@gmail.com
[3]स्वतंत्र शोधकर्ता, एम.ऐ. भूगोल, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
anmolsoni@gmail.com

सारांश

यह शोधपत्र राजस्थान की लोककथाओं, लोकगीतों, कहावतों और सामाजिक & धार्मिक परंपराओं में जल नदियों और वर्षा की महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करता है। राजस्थान अपनी शुष्क जलवायु और सीमित जल संसाधनों के बावजूद एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का धनी है जहाँ जल को केवल भौतिक संसाधन के रूप में नहीं बल्कि जीवन पवित्रता और सामूहिक चेतना के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

शोध के दौरान यह पाया गया कि लोकगीतों में वर्षा का आह्वान और सूखे की पीड़ा को गहराई से व्यक्त किया गया है। *गणगौर* जैसे त्योहारों में स्थानीय जल स्रोतों की पूजा यह दर्शाती है कि समाज ने जल को धार्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाया है। विवाह, जन्म और मृत्यु से जुड़े अनुष्ठानों में जल का उपयोग यह दर्शाता है कि यह तत्व न केवल जीवनदायी है बल्कि आध्यात्मिक शांति और मोक्ष का माध्यम भी है। शोध के लिए पारंपरिक साहित्य की समीक्षा पुस्तकीय अध्ययन और स्थानीय बुजुर्गों एवं लोक कलाकारों के साक्षात्कार के माध्यम से मौखिक साक्ष्यों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान के लोकगीतों में वर्षा और जल को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जबकि सूखे से संबंधित कहानियाँ संघर्ष, सामुदायिक प्रयास और सहनशीलता के प्रतीक हैं। पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ जैसे बावड़ी, जोहड़ और टांका लोककथाओं और कहावतों के माध्यम से पीढ़ियों से संरक्षित हैं।

यह शोध यह निष्कर्ष निकालता है कि राजस्थान की यह समृद्ध लोक संस्कृति न केवल ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक जल संरक्षण प्रयासों और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के लिए भी प्रासंगिक शिक्षाएं प्रदान करती है।

कुंजी शब्द: राजस्थान, लोककथाएं, लोकगीत, कहावतें, सूखा, सांस्कृतिक भूगोल

परिचय

भारत के पश्चिमी हिस्से में स्थित राजस्थान अपनी शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। यहां का जीवन सदियों से जल की उपलब्धता और उसके प्रबंधन पर निर्भर रहा है। इस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों ने न केवल जल संरक्षण की अनोखी प्रथाओं को जन्म दिया, बल्कि इसके इर्द-गिर्द एक समृद्ध सांस्कृतिक और लोक साहित्य भी विकसित किया। जल, नदियाँ, झीलें, वर्षा, और सूखा केवल भौतिक तत्व नहीं हैं; ये सांस्कृतिक प्रतीक भी हैं, जिनका उल्लेख लोकगीतों, कहानियों, और कहावतों में होता है। इन परंपराओं ने न केवल लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित किया है, बल्कि उन्हें जल की महत्ता और उसके संरक्षण के लिए प्रेरित भी किया है।

राजस्थान की लोक परंपराओं में जल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोकगीतों में जहाँ वर्षा का आह्वान किया जाता है, वहीं सूखे के समय की पीड़ा को गीतों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। लोककथाओं में नदियाँ और झीलें पवित्रता और बलिदान की कहानियों से जुड़ी होती हैं। इसके अलावा, जल पर आधारित कहावतें और सूक्तियां समाज के व्यवहार और सोच को भी दर्शाती हैं, जो जल संरक्षण और उसके समझदारी से उपयोग के महत्व पर जोर देती हैं।

इस शोधपत्र का उद्देश्य यह है कि राजस्थान की सांस्कृतिक और मौखिक परंपराओं में जल से जुड़े विषयों का गहन अध्ययन किया जाए। यह अध्ययन यह दर्शाने का प्रयास करेगा कि कैसे जल के विभिन्न रूपों जैसे चाहे वह नदी, झील, वर्षा, या सूखा हो, ने लोकगीतों, कहानियों, और कहावतों में अपनी जगह बनाई है और कैसे इनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इन परंपराओं को समझने से न केवल सांस्कृतिक धरोहर का महत्व स्पष्ट होता है, बल्कि वर्तमान समय में जल संरक्षण के संदर्भ में इनसे मिलने वाली शिक्षाएं भी उजागर होती हैं।

साहित्य समीक्षा

जल, नदियाँ, वर्षा और सूखा मानव जीवन के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं प्रतीकात्मक अर्थों के महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो विश्व की विभिन्न लोक परंपराओं में अभिव्यक्त होते हैं।

स्मोल्याक आदि (2019) ने यूक्रेन के लोकगीतों में जल को शुद्धिकरण, सुरक्षा तथा नए जीवन के प्रतीक के रूप में दर्शाया, जबकि मलाश (2022) ने बुल्गारियाई लोकगीतों में जल को प्रेम, अमरता और जीवन-मृत्यु के संबंधों से जोड़ा। कोजी (2017) के अनुसार, हंगरी के लोकगीतों में नदियाँ भावनात्मक और सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति करती हैं।

नुंग (2022) ने वियतनाम के लोकगीतों में जल को जीवनदायी एवं विनाशकारी दोनों रूपों में प्रस्तुत किया, वहीं निमनहेमिंदा (2005) ने थाई लोकमान्यताओं में जल को आध्यात्मिक एवं पौराणिक तत्वों से जोड़ा। सिलवर्स (2015) ने ब्राज़ील के गीतों में वर्षा और सूखे के माध्यम से पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को रेखांकित किया, जबकि आइज़नर (2014) ने प्रदर्शन कला के माध्यम से सूखा-वर्षा की सांस्कृतिक स्मृति को समझाया।

या-ली (2010) ने चीन में वर्षा-प्रार्थना गीतों को धार्मिक और सामुदायिक आवश्यकता से जोड़ा। कपुरिया और कुमार (2022) ने पंजाब के लोकगीतों में नदियों को आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में व्याख्यायित किया। भारतीय संदर्भ में, ओजा (2020), सिंगराजा (2022) और सहाय (2000) के अध्ययन जल को शुद्धता, उर्वरता, नैतिकता और जीवनदायिनी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार, विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि जल केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक मूल्यों और पारंपरिक ज्ञान का महत्वपूर्ण वाहक है, जो लोक परंपराओं में गहराई से निहित है।

विधि

इस अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान की लोककथाओं, लोकगीतों एवं कहावतों में जल, नदियाँ, वर्षा, सूखा और जल प्रबंधन के सांस्कृतिक एवं प्रतीकात्मक महत्व को समझना है। इसके लिए बहुआयामी गुणात्मक पद्धति अपनाई गई। प्रारंभिक चरण में पुस्तकालय अनुसंधान के माध्यम से लोकसंस्कृति, जल प्रबंधन और संबंधित परंपराओं पर उपलब्ध पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं लेखों का अध्ययन किया गया, जिससे विषय का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ स्पष्ट हो सके।

तत्पश्चात, स्थानीय बुजुर्गों, लोकगायकों एवं लोककथाकारों के साथ साक्षात्कार किए गए। इन साक्षात्कारों में पारंपरिक ज्ञान के संरक्षकों का चयन कर खुले संवाद और संरचित प्रश्नावली दोनों का उपयोग किया गया, ताकि गहन एवं अनुभवजन्य दृष्टिकोण प्राप्त हो सके। अंततः, जल से संबंधित लोकगीतों एवं कथाओं का व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया, जिसमें पारंपरिक कलाकारों की सहभागिता के माध्यम से उनके अर्थ, संरचना और निहित सांस्कृतिक संदेशों को समझा गया।

राजस्थान में जल का भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व

राजस्थान, भारत का सबसे बड़ा राज्य] अपनी भौगोलिक विविधता और शुष्क जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र अधिकांशतः मरुस्थलीय और अर्ध&शुष्क भूभागों से घिरा हुआ है, जहाँ वर्षा की अनिश्चितता और जल की सीमित उपलब्धता ने मानव जीवन और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। इस प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों ने न केवल यहाँ के निवासियों के जल संसाधनों के प्रबंधन की विधियों को प्रभावित किया है, बल्कि इसने एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा को भी जन्म दिया है, जिसमें जल एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में उभर कर सामने आता है।

भौगोलिक दृष्टिकोण से जल का महत्व

राजस्थान की भौगोलिक संरचना में विशाल मरुस्थल] जैसे थार का रेगिस्तान, और सीमित जल स्रोत शामिल हैं। यहां की जलवायु अत्यधिक शुष्क होती है, जिसमें वार्षिक वर्षा सामान्यतः कम होती है और यह असमान रूप से वितरित रहती है। इन प्राकृतिक चुनौतियों ने यहाँ के लोगों को जल संरक्षण के कुशल और अद्वितीय तरीकों का विकास करने के लिए प्रेरित किया। *बावड़ी, जोहड़, टांका,* और *स्टेपवेल्स* जैसी जल

संचयन प्रणालियाँ इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये प्रणालियाँ न केवल जल संचयन और आपूर्ति में सहायक थीं, बल्कि सामुदायिक सहयोग और सामाजिक एकजुटता का प्रतीक भी बन गईं।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से जल का महत्व

राजस्थान की लोकसंस्कृति में जल का स्थान केवल भौतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सामाजिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। लोककथाओं, गीतों और कहावतों में जल का उल्लेख पवित्रता, शुद्धता, जीवन के स्रोत और सामुदायिक एकता के प्रतीक के रूप में होता है। राजस्थान के लोकगीतों में *मल्हार* जैसे गीत वर्षा के आगमन का आह्वान करते हैं और सूखे के समय सामूहिक दुःख और प्रार्थना को व्यक्त करते हैं। ये गीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि समुदाय के पारस्परिक संबंध और जल के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक हैं।

जल से संबंधित लोककथाएं भी राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए, *पुष्कर झील* की पौराणिक कथा, जिसमें इसे भगवान ब्रह्मा द्वारा निर्मित बताया गया है, इस बात का प्रमाण है कि जल को एक पवित्र और देवीय तत्व के रूप में देखा गया है। इसी तरह की कथाएँ जल के संरक्षण और उसके महत्व को पीढ़ियों से संजोए रखने का काम करती हैं।

जल प्रबंधन और लोक परंपराएं

राजस्थान के पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ जैसे *बावड़ी* और *जोहड़* लोककथाओं और गीतों में अमर हो चुकी हैं। ये प्रणालियाँ समाज के पारंपरिक ज्ञान और सतत विकास के प्रति समर्पण को दर्शाती हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान की कहावतें जैसे “बूँद-बूँद से सागर भरता है” जल संचयन की आवश्यकता और महत्व पर बल देती हैं। ये कहावतें और सूक्तियां लोक जीवन के दैनिक अनुभवों से निकली हैं और जल के महत्व को समझाने के साथ-साथ जल संरक्षण की शिक्षा भी देती हैं।

सामुदायिक और धार्मिक संदर्भ

जल का महत्व केवल आर्थिक और सामाजिक संदर्भों तक सीमित नहीं है। यह धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक पर्वों में भी गहराई से निहित है। *छठ पूजा*, जो पूर्वी राजस्थान के कुछ हिस्सों में मनाई जाती है, और अन्य स्थानीय त्योहार जल के प्रति श्रद्धा और आभार का प्रतीक हैं। ये पर्व न केवल जल की शुद्धता को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि सामूहिक प्रार्थना और समाज के सामूहिक प्रयासों का भी प्रतीक हैं।

जल, वर्षा और नदियों से जुड़े लोकगीतों का वर्णन

राजस्थान के लोकगीतों में जल, वर्षा, और नदियों का अत्यधिक सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व है। इन लोकगीतों में जीवन के प्रति गहरी संवेदनाएं और समुदाय के साथ प्रकृति के निकट संबंध को दर्शाया गया है। वर्षा का आह्वान और जल की प्रशंसा इन गीतों में बार&बार आने वाले विषय हैं, जो समाज की जल पर निर्भरता और उससे जुड़े उल्लास और दुःख को प्रतिबिंबित करते हैं।

1- वर्षा का आह्वान और मल्हार गीत-

राजस्थान में वर्षा ऋतु की शुरुआत आषाढ़ महीने में हो जाती है। मरुभूमि की इस भूमि पर वर्षा का विशेष महत्व है, और इसी कारण यहाँ के लोकगीतों, कहावतों, और कथाओं में वर्षा से जुड़े अनगिनत चित्रण प्रस्तुत किए गए हैं। इन लोकगीतों में ग्रामीण जन आकाश में बादलों के आगमन की प्रार्थना करते हुए इंद्र देवता का आह्वान करते दिखाई देते हैं।

बरस-बरस म्हारा इंदर राजा, तू बरस्यां म्हारा काज सारे।

“बादली” गीत राजस्थान के लोकजीवन में वर्षा और जल के महत्व को खूबसूरती से प्रस्तुत करता है। गीत के हर शब्द में धरती की प्यास और लोगों की प्रतीक्षा को व्यक्त किया गया है। इस गीत के माध्यम से लोग इंद्र देवता को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं, जो उनके लिए वर्षा और जीवन के देवता माने जाते हैं। इसमें जल का धार्मिक महत्व, प्राकृतिक पूर्ति के रूप में उसकी भूमिका और कृषि समाज के जीवन में उसका स्थान स्पष्ट होता है।

नहीं नदी- नाला अठे नहीं सरवर सरसाय
एक आसरो वादली मरु सूकी मत जाय।
आयी छबि अडीकतां मुरधर कोड करै
पान फूल सै सुकिया कांई भेट धरै? (चन्द्रसिंह, 2014)

अर्थात:- इस मरुधर प्रदेश में न तो नदियाँ हैं, न ही जलधाराएँ, और न ही विशाल सरोवर। यहाँ के लोग केवल बादलों के आसरे पर निर्भर हैं, और इसलिए वे बादलों से विनती करते हैं कि मरुधरा में बिना बरसे यूँ ही चले न जाएँ। लेकिन इस सूखी भूमि के लोग वर्षा के

स्वागत में क्या भेंट करें यहाँ तो फूल-पत्तियाँ सब सूख चुके हैं, बाग&बगीचे सूने पड़े हैं। ऐसे में वर्षा के प्रति उनकी प्रेमपूर्ण प्रार्थना और अपेक्षा लोकजीवन में गहरे धंसी हुई है।

सोनै सूरज ऊगियो दीही वादलियां
मुरधर लेवै वारणा भर-भर आंखड़ियाँ (चन्द्रसिंह, 2014)

अर्थात:- आज सोने का सूरज उगा है जो बादलियाँ दिखाई दी हैं। मरुधर इन बादलियों को आँखें भर-भर कर बलैया ले रही है।

ऊंडी अंबर में उठी गह डंबर धहराय
वरस सुहाणी वण घटा सारी धर सरसाय। (चन्द्रसिंह, 2014)

अर्थात:- जब बादलियाँ ऊँची उठती हैं और गहराती हैं, तो घटाएँ सुहानी हो जाती हैं और धरती हरषा उठती है। मरुभूमि में बादलों का आना केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि उत्सव का प्रतीक होता है। जैसे ही आसमान में बादल घने होने लगते हैं, पूरे वातावरण में नई ऊर्जा और उमंग का संचार हो जाता है। घटाएँ जब सुहानी हो जाती हैं, तो मानो धरती पर उत्सव का माहौल छा जाता है। हर एक कण इस वर्षा की प्रतीक्षा में खुशी से झूम उठता है। सूखी पड़ी धरती बादलों की गूँज सुनकर हरषाने लगती है, और चारों ओर एक नई जीवनधारा बहने का आभास होता है।

यह कहावतें इस प्रदेश में वर्षा की कमी की पीड़ा को दर्शाती हैं और इस बात को भी उजागर करती हैं कि कैसे यह लोकजीवन में आशा और प्रतीक्षा का प्रतीक बन गई है। राजस्थान की यह संस्कृति जहाँ एक ओर वर्षा की महत्ता को समझती है, वहीं दूसरी ओर इन कहावतों के माध्यम से अपने जीवन के संघर्षों को भी साझा करती है। यहाँ की लोककथाओं और गीतों में वर्षा केवल जल नहीं, बल्कि जीवन, आशा और सामूहिक प्रार्थना का प्रतीक है।

2. नदियों का सांस्कृतिक महत्व :-

नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं हैं, वे समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

पौराणिक और धार्मिक कथाओं के अनुसार, *बाणगंगा नदी* (जिसे *रुंडित नदी* भी कहा जाता है) का विशेष महत्व महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि इसकी उत्पत्ति अर्जुन के तीर के प्रहार से हुई थी। महाभारत के समय, जब पांडव वनवास में थे और उन्हें जल की आवश्यकता पड़ी, तब अर्जुन ने अपने धनुष से तीर चलाकर इस नदी का प्रवाह उत्पन्न किया। तभी से यह नदी *बाणगंगा* के नाम से प्रसिद्ध हो गई, जो अर्जुन के अद्भुत पराक्रम और जल के प्रति उनकी संवेदनशीलता का प्रतीक है।

वर्तमान समय में, कृषि कार्यों के लिए प्रयोग होने वाली *फव्वारा पद्धति* का उल्लेख भी लोककथाओं में मिलता है। लोककथाओं के अनुसार, यह तकनीक *भीम* के बलशाली प्रहार से जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि भीम ने अपने पैर से भूमि पर प्रहार किया, जिससे जल का एक तीव्र स्रोत फूट पड़ा। यह स्रोत स्थानीय किसानों के लिए सिंचाई का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया।

इन कथाओं से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान के लोकजीवन में जल स्रोतों का न केवल भौतिक महत्व है, बल्कि ये पौराणिक कहानियों और धार्मिक मान्यताओं के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी गहराई से जुड़े हुए हैं। *बाणगंगा* जैसी नदियाँ और *भीम का प्रहार* जैसी लोककथाएँ यह दर्शाती हैं कि किस प्रकार जल स्रोत और उनके संरक्षण की परंपराएँ प्राचीन काल से लोकसंस्कृति का हिस्सा रही हैं।

राजस्थान की लोककथाओं और लोकगीतों में नदियों का विशेष स्थान है। *पार्वती और शिव* की कहानियाँ, *नक्की झील* की पौराणिक कथा, और *पुष्कर झील* से जुड़ी लोकगाथाएँ यह दर्शाती हैं कि नदियाँ किस प्रकार से धार्मिक और ऐतिहासिक घटनाओं का हिस्सा रही हैं। नदियों को मातृत्व और करुणा का प्रतीक माना जाता है, और इनसे जुड़ी कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं।

राजस्थान की नदियाँ जैसे *माही, चंबल, लूणी,* और *बनास* को पवित्र माना जाता है। नदियों के किनारे स्थित धार्मिक स्थलों जैसे *पुष्कर सरोवर* और *बनेश्वर धाम,* पर हर वर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं। इन नदियों में स्नान को आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता है। *अस्थि विसर्जन* और *पिंडदान* जैसे अनुष्ठान भी इन पवित्र नदियों में किए जाते हैं, जो मृत्यु के बाद आत्मा की शांति और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति का प्रतीक हैं।

3. सूखा और संघर्ष के गीत :-

राजस्थान का अधिकांश भाग मरुस्थलीय है और यहाँ वर्षा की कमी आम बात है। सूखा और अकाल यहाँ के जीवन का एक स्थायी हिस्सा बन गए हैं और यही कारण है कि अकाल को राजस्थान का पर्याय माना जाने लगा है। इस प्रदेश के लोकगीतों, कहावतों, और लोककथाओं में बार-बार अकाल की स्थायी समस्या को चित्रित किया गया है।

पग पुंगल, सिर मेडता, उदरज बीकानेर
फिरतौ धिरती कोटडे, ठावो जैसलमेर

अर्थात:- मरुभूमि में अकाल को मानवीकरण के रूप में चित्रित किया गया है। लोकमान्यताओं के अनुसार, अकाल का भी एक निवास स्थान (नागौर) में, हृदय *बीकानेर* में होता है। कभी-कभी वह *कोटड़ा* (बाड़मेर) में भ्रमण करता है, लेकिन उसका स्थायी निवास स्थान *जैसलमेर* माना गया है।

सात काल सताइस जमाना तरेसठ कुदरा काचा
तीन काल तो इस्या पडै, जको गाँवां पूत मिलै नही पाछा।

राजस्थान की मरुभूमि में अकाल का प्रभाव इतना गहरा होता है कि यहाँ के लोग आने वाले सौ वर्षों तक उसका हिसाब याद रखते हैं। उनकी स्मृतियों में अकाल के कड़वे अनुभव पीढ़ी दर पीढ़ी संजोए जाते हैं। माना जाता है कि इन सौ वर्षों में सात बार भयंकर अकाल पड़ते हैं, 27 वर्षों में "जमाने" अर्थात् अच्छी फसलें होती हैं, 63 बार 'अकाल' की स्थिति बनती है, और तीन बार ऐसे भयावह अकाल आते हैं, जब गाँव के गाँव खाली हो जाते हैं। इन अकालों में जीवित रहना इतना कठिन हो जाता है कि शिशुओं का जीवन बचाना लगभग असंभव हो जाता है।

यह विवरण सिर्फ एक आंकड़ा नहीं, बल्कि मरुभूमि के लोगों के संघर्ष, धैर्य, और प्रकृति के साथ उनके सामंजस्य का प्रमाण है। यह लोकजीवन के उस अनूठे पहलू को दर्शाता है, जहाँ कठिन परिस्थितियों के बावजूद, लोग अपने अनुभवों से सीखते हैं और भविष्य के लिए तैयार रहते हैं। अकाल का यह चक्र उनकी चेतना में केवल पीड़ा नहीं, बल्कि सहनशीलता और सामूहिकता का प्रतीक भी बन गया है।

4. जल और प्रेम के प्रतीक:-

राजस्थान की लोककथाओं में जल के साथ प्रेम के अटूट संबंधों को बड़ी खूबसूरती से दर्शाया गया है। सिरोही में स्थित *नक्की झील* प्रेम संबंधों की गहराई से ओत&प्रोत मानी जाती है। लोककथाओं के अनुसार, इसका निर्माण एक प्रेमी *रसिया बालम* ने अपने नाखूनों से किया था, जो प्रेम की सच्ची निशानी के रूप में देखा जाता है। नक्की झील का यह मिथक प्रेम और जल के बीच के अनोखे संबंध को उजागर करता है।

इसी प्रकार, पश्चिमी राजस्थान की *मांड गायकी* में जल और प्रेम के अनेक गीतों का वर्णन मिलता है, जो न केवल जल के प्रति सम्मान को दर्शाते हैं, बल्कि प्रेम की उस गहराई को भी अभिव्यक्त करते हैं जो जल के प्रतीक से जुड़ी हुई है। इन गीतों में जल का महत्व प्रेम और जीवन के प्रतीक के रूप में किया गया है। जल का यह सांस्कृतिक प्रतीक प्रेम, पवित्रता और अनन्तता को दर्शाता है, जो राजस्थान के लोकजीवन में रचा&बसा है।

आभो धर्रयो ओ म्हारी ननद बाइसा रा बीरा!
ओ हजारी ढोला! आभो धर्रयो! (डॉ. मंगत बादल, 2010)

मरुभूमि की लोकपरंपराओं में वर्षा केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि गहरे भावनात्मक प्रतीकों से जुड़ी हुई है। जब वर्षा ऋतु से पहले बादलों की गरज सुनाई देती है, तो यह केवल पानी की उम्मीद ही नहीं जगाती, बल्कि प्रेम के संदेशवाहक के रूप में भी कार्य करती है। लोकगीतों में वर्णित है कि प्रेयसी अपने प्रियतम को बादलों की पहली गरज सुनते ही संदेश भेजती है। वह कहती है, *"हे प्रियवर, अब तो बादल भी गरजने लगे हैं, यह मिलन का समय है"*

यह भाव वर्षा ऋतु को केवल जल के आगमन की ऋतु तक सीमित नहीं रखता, बल्कि इसे प्रेम और मिलन के प्रतीक के रूप में भी स्थापित करता है। वर्षा की हर बूंद और बादलों की हर गरज लोकजीवन में प्रेम और आत्मीयता की गूंज को पुनर्जीवित करती है।

श्रावण माह के गीतों में गहरी मर्मिकता, नारी की बेबसी, और भाई&बहन के अटूट प्रेम का भाव देखने को मिलता है, जो सभी वर्षा के प्रतीक के रूप में प्रकट होते हैं। इन गीतों में बहन अपने ससुराल में बैठी भाई की प्रतीक्षा करती है, बारिश की बूंदें उसके मन में अपने मायके लौटने की चाह और घर-परिवार की याद को ताजा कर देती हैं।

श्रावण के गीतों में वर्षा न केवल प्रेम, मिलन और आत्मीयता का प्रतीक है, बल्कि नारी की भावनाओं, उसकी वेदना, और सामाजिक संबंधों का भी सुंदर चित्रण है। इन गीतों में भाई का अपनी बहन के लिए ससुराल जाकर उसे लेकर आने का प्रण और बहन का अपने मायके लौटने का उत्साह भावुकता से भर देता है।

सावन बरसे साहबा सूना गढ़ गिरनार

परनाला पाणी पड़े घरा उड़ीके नार।

लोकगीतों में प्रेयसी अपनी विरह दशा को व्यक्त करने के लिए सावन की वर्षा का सहारा लेती है। वह अपने प्रियतम को संदेश भेजती है कि "सावन में वर्षा हो रही है, जिसमें अथाह पानी बह रहा है, लेकिन आपके बिना सारा किला सूना लग रहा है और मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

इन गीतों में वर्षा, जो श्रावण में होती है, केवल प्रकृति की झलक नहीं बल्कि रिश्तों में नई उमंग, ममता और प्रेम का भी प्रतीक बन जाती है। राजस्थान की लोक परंपरा में ये गीत न केवल मौसम का स्वागत करते हैं बल्कि जीवन में भावनाओं और संबंधों की अनमोलता को भी उजागर करते हैं।

5. **सामाजिक और धार्मिक भूमिक:**

राजस्थान की सामाजिक और धार्मिक परंपराओं में जल स्रोतों का विशेष स्थान है। यहाँ के विभिन्न त्योहार और अनुष्ठान जल के इर्द-गिर्द आयोजित किए जाते हैं, जो समाज में जल की महत्ता को दर्शाते हैं।

गणगौर पर्व और जल स्रोतों का महत्व

गणगौर राजस्थान का एक प्रमुख त्योहार है, जो शिव और पार्वती के मिलन का प्रतीक है। यह त्योहार विशेष रूप से महिलाओं द्वारा मनाया जाता है, और इसका आयोजन अक्सर स्थानीय जल स्रोतों जैसे *नदी, तालाब,* या *कुआँ* के पास किया जाता है। *उदयपुर का गणगौर घाट* इस त्योहार के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ बड़ी संख्या में महिलाएँ जल के निकट एकत्र होकर पूजा-अर्चना करती हैं। जल के पास इस आयोजन का उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, बल्कि जल के प्रति आभार व्यक्त करना भी है।

पुष्कर मेला और सरोवर का महत्व

राजस्थान के *पुष्कर मेले* का केंद्र *पुष्कर झील* है। इस धार्मिक मेले में लाखों श्रद्धालु झील के पवित्र जल में स्नान करके अपने पापों से मुक्ति पाने का विश्वास रखते हैं। यह झील न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक मेलजोल और सांस्कृतिक आदान&प्रदान के लिए भी महत्वपूर्ण है।

पाणिग्रहण संस्कार:- विवाह के दौरान *पाणिग्रहण* अनुष्ठान में वर और वधू के हाथों में जल रखा जाता है, जो एक-दूसरे के प्रति पवित्र संबंध और जीवन के हर परिस्थिति में साथ निभाने की शपथ का प्रतीक है।

कुआं पूजन:- बच्चे के जन्म के बाद गाँव या परिवार में स्थित *कुएं* की पूजा की जाती है। यह अनुष्ठान जल के स्रोत के प्रति कृतज्ञता और नवजात की लंबी उम्र की कामना के रूप में किया जाता है।

अस्थि विसर्जन:- मृत्यु के बाद मृतक की अस्थियों को पवित्र नदियों जैसे *गंगा, माही,* या *पुष्कर सरोवर* में विसर्जित किया जाता है। यह अनुष्ठान मोक्ष प्राप्ति और आत्मा की शुद्धि का प्रतीक है। जल केवल जीवन का स्रोत ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक शांति और मोक्ष का माध्यम भी माना जाता है। विशेष रूप से दक्षिण राजस्थान में रहने वाले आदिवासी समुदायों के लिए *माही नदी* का विशेष महत्व है। यह नदी उनके धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र है।

आदिवासी समुदाय अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन माही नदी में करके गहरी आत्मिक अनुभूति प्राप्त करते हैं। उनके लिए यह नदी केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि *मोक्षदायिनी* है, जो जीवन और मृत्यु के बीच की दैवीय कड़ी है। माही नदी के प्रति यह भावना आदिवासी समाज में जल के प्रति अटूट श्रद्धा और आस्था का प्रतीक है।

इसी प्रकार *सोम, माही,* और *जाखम* नदियों के त्रिवेणी संगम पर स्थित *वेणेश्वर धाम* को आदिवासी समुदाय *महाकुंभ* का दर्जा देते हैं। यहाँ हर वर्ष हजारों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं, और यह स्थान उनके लिए न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक एकता का केंद्र भी है। यह संगम जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं-धर्म, संस्कृति, और प्रकृति&का प्रतीक बनकर उभरता है

राजस्थान में जल स्रोतों के प्रति यह आस्था न केवल धार्मिक विश्वासों को प्रकट करती है, बल्कि यह दिखाती है कि यहाँ के लोग अपने प्राकृतिक संसाधनों के प्रति कितने संवेदनशील और कृतज्ञ हैं। जल यहाँ केवल एक भौतिक आवश्यकता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का अनमोल हिस्सा है।

6. **वर्षा और फसल से संबंधित कहावतें** :-

आसाढे सूद नोमी, घण बदल घण बीज
कोठा खेर खंखेर दो, राखो बदल ने बीज ।। (विक्रम सिंह राठौर, 2012)

अर्थात:- राजस्थान में आषाढ़ शुक्ल नवमी को एक महत्वपूर्ण संकेत माना गया है। इस दिन यदि आकाश में घने बादल हों और बिजली खूब चमक रही हो, तो यह एक शुभ संकेत माना जाता है। ऐसी स्थिति में यह कहावत है: "*कोठी खाली कर दो*" अर्थात सारा अनाज बेच

डालो और केवल बोने के लिए बीज और बैल ही रखो। इसका अर्थ है कि वर्षा अच्छी होगी और फसलें भी भरपूर होंगी, इसलिए अनाज एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं है।

"*आसोजा में मोती बरसें*" (*डॉ. विक्रम सिंह राठौड़, 20*) यह कहावत दर्शाती है कि अश्विन मास में होने वाली वर्षा को अत्यंत शुभ माना गया है। इस समय की वर्षा को मोतियों की तरह कीमती माना जाता है, क्योंकि यह फसल के लिए अत्यधिक लाभकारी होती है और अच्छी उपज का संकेत देती है।

इसी प्रकार एक अन्य कहावत "ईसानी- बिसानी" (*डॉ. विक्रम सिंह राठौड़, 2012*) कहती है कि यदि इशान कोण (पूर्वोत्तर दिशा) में बिजली चमकती है, तो यह अच्छी फसल का संकेत है। इस दिशा से आने वाली बारिश को समृद्धि का प्रतीक माना गया है, और यह बताता है कि इस वर्ष की फसलें लहलहा उठेंगी।

वहीं, "*काती रो मेह कटक बराबर*" (*डॉ- विक्रम सिंह राठौड़, 2012*) यह कहावत बताती है कि यदि कार्तिक के महीने में वर्षा हो तो यह फसल के लिए हानिकारक मानी जाती है। कार्तिक की बारिश खेतों में पक चुकी फसल को नुकसान पहुँचाती है, और इससे किसान की मेहनत पर पानी फिर जाता है।

ये सभी कहावतें राजस्थान के लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा रही हैं। इनमें स्थानीय लोगों का मौसम और कृषि के प्रति गहन ज्ञान और सूझ-बूझ झलकती है। राजस्थान का लोकजीवन इन कहावतों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी यह संदेश देता आया है कि किस प्रकार जलवायु और मौसम के संकेतों पर आधारित ज्ञान का कृषि और जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। यह परंपरागत ज्ञान न केवल प्राकृतिक घटनाओं का अनुभवजन्य विवरण है, बल्कि यह राजस्थान के लोगों के संघर्ष, आशा और दूरदर्शिता का भी प्रतीक है।

इस तरह की कहावतें यह दर्शाती हैं कि राजस्थान के लोगों का वर्षा और मौसम के संकेतों के प्रति गहरा ज्ञान था। वे इन प्राकृतिक संकेतों के आधार पर अपने कृषि कार्यों की योजना बनाते थे। यह कहावतें यह भी बताती हैं कि किस प्रकार खेती और अनाज राजस्थान के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। यहाँ का समाज वर्षा और कृषि के बीच के इस संबंध को समझता था और इसी समझ के आधार पर अपनी जीवनशैली का निर्माण करता था।

निष्कर्ष और चर्चा

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि राजस्थान की लोककथाओं, लोकगीतों, और कहावतों में जल, नदियाँ, वर्षा, और सूखा एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। ये पारंपरिक कथाएँ और गीत न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग हैं, बल्कि जल के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना को भी प्रतिबिंबित करते हैं। इस खंड में इन निष्कर्षों की चर्चा की जा रही है, जिसमें इनका सांस्कृतिक महत्व, सामुदायिक भूमिका और समकालीन प्रासंगिकता शामिल है।

1- सांस्कृतिक महत्व और प्रतीकात्मकता

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जल राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर में केवल एक भौतिक संसाधन नहीं है, बल्कि एक प्रतीकात्मक तत्व भी है। लोकगीतों में जल को जीवनदायिनी शक्ति और वर्षा के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। *मल्हार* जैसे गीत जहां वर्षा के स्वागत का आह्वान करते हैं, वहीं सूखे के समय गाए जाने वाले गीत समुदाय की पीड़ा और सामूहिक प्रार्थना को व्यक्त करते हैं। इन गीतों का उद्देश्य न केवल मनोरंजन है, बल्कि ये सामुदायिक एकता और संघर्ष की भावना को प्रोत्साहित करते हैं।

लोककथाओं में जल का महत्व और भी गहराई से परिलक्षित होता है। *पुष्कर झील* की पौराणिक कथा जैसी कहानियाँ जल के पवित्र और देवत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करती हैं। जल से जुड़ी बलिदान की कहानियाँ समाज में जल के प्रति सम्मान और उसके संरक्षण के महत्व को दर्शाती हैं। ये कथाएँ सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक शिक्षाओं को संप्रेषित करने का एक शक्तिशाली माध्यम हैं।

2- समुदाय और जल प्रबंधन का संबंध

राजस्थान में जल संकट की आवृत्ति ने समुदायों को एक साथ आने और सामूहिक प्रयासों के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया है। अध्ययन से पता चलता है कि पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ जैसे *बावड़ी, जोहड़,* और *टांका* न केवल जल संरक्षण की दृष्टि से प्रभावी थीं, बल्कि समाज में सामुदायिक एकता और सहयोग के प्रतीक भी थीं। इन प्रणालियों का वर्णन लोकगीतों और कहानियों में पाया जाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जल संरक्षण का संदेश पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से पारित होता रहा है।

3- प्रकृति और सामाजिक व्यवहार में जल की भूमिका

कहावतों और सूक्तियों के विश्लेषण से यह पता चला है कि राजस्थान के समाज में जल का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कहावतें जैसे "बूँद-बूँद से सागर भरता है" और "जल ही जीवन है" यह दर्शाती हैं कि जल के प्रति समुदाय में एक गहरी समझ और सम्मान है। इन कहावतों में जल के प्रति संयम, प्रबंधन, और संरक्षण का संदेश है, जो समाज के दैनिक जीवन और व्यवहार में प्रतिध्वनित होता है।

4- सूखे के अनुभव और सामूहिक प्रतिक्रिया

सूखा राजस्थान के लिए एक बड़ी चुनौती है, और इस अध्ययन में यह पाया गया है कि सूखे के समय सामुदायिक प्रयासों की कहानियाँ और लोकगीत संघर्ष और सहनशीलता के प्रतीक हैं। ये गीत और कथाएँ जल संकट के दौरान सामूहिक प्रयासों और एकजुटता के महत्व को दर्शाती हैं। उदाहरण के लिए, लोककथाओं में गाँवों द्वारा सामूहिक रूप से तालाब बनाने की कहानियाँ, सूखे से लड़ने के लिए एकजुटता और संघर्ष का प्रतीक हैं। ये कहानियाँ और गीत न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि वे समकालीन जल संकटों के संदर्भ में भी प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं।

5- समकालीन प्रासंगिकता और परंपरागत ज्ञान की स्थायित्व

आज के समय में जब जल संकट और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण हो गए हैं, राजस्थान की पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ और उनसे जुड़ी सांस्कृतिक कहानियाँ एक महत्वपूर्ण सीख प्रदान करती हैं। यह अध्ययन बताता है कि कैसे पारंपरिक ज्ञान, जो लोककथाओं, गीतों, और कहावतों के माध्यम से संरक्षित है, आधुनिक जल प्रबंधन और नीति-निर्माण में सहायक हो सकता है। इन सांस्कृतिक परंपराओं को पुनर्जीवित और संरक्षित करना न केवल सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह जल संरक्षण के लिए भी आवश्यक है।

6- शोध में सीमाएँ और भविष्य के अध्ययन के लिए सुझाव

यद्यपि इस अध्ययन ने राजस्थान की जल से संबंधित लोक परंपराओं का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया है, लेकिन इसमें कुछ सीमाएँ भी हैं। जैसे की लोककथाओं और गीतों का संकलन सीमित क्षेत्रों तक सीमित रहा है। भविष्य के अध्ययन में विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में जल से संबंधित अन्य पारंपरिक प्रथाओं का विश्लेषण करना लाभप्रद होगा। इसके अलावा, अधिक से अधिक मौखिक साक्ष्यों और समकालीन परिवेश में लोककथाओं की भूमिका का विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ सूची:-

[1]. विक्रम सिंह राठौड़ , *राजस्थानी कहावतों में वर्षा*, सोजती गेट, जोधपुर (राज.), 2012

[2]. मंगत बादल, *सावन सुरंगों ओसरयो (निबंध संग्रे)* , राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास / संस्करण : 2010

[3]. चन्द्रसिंह, *बादळी*, राजस्थानी ग्रंथागार, सोजती गेट, जोधपुर (राज.), 2014

[4]. Baranyiné Kóczy, J. Cultural Conceptualisations of river in Hungarian Folksongs. In: Sharifian, F. (eds) Advances in Cultural Linguistics. Cultural Linguistics. Springer, Singapore. 2017 https://doi.org/10.1007/978-981-10-4056-6_11

[5]. Eisner, R. Drought and Rain: re-creations in Vietnamese, cross-border heritage. *International Journal of Heritage Studies*, 20, 798 - 817. 2014 https://doi.org/10.1080/13527258.2013.818567.

[6]. Kapuria, R., & Kumar, N. Singing the River in Punjab: Poetry, Performance and Folklore. *South Asia: Journal of South Asian Studies*, 45, 1072 - 1094. 2022 https://doi.org/10.1080/00856401.2022.2124680.

[7]. Malash, O. WATER IN THE BULGARIAN WORLD PICTURE (a case study of the folk songs of the Bulgarians in Ukraine). *Linguistic and Conceptual Views of the World*. 2022 https://doi.org/10.17721/2520-6397.2022.1.05.

[8]. Nhung, N. AN INSIGHTFUL STUDY ON RIVER CULTURE IN FOLK-SONGS OF LOWER MEKONG DELTA, VIETNAM. *European Journal of Literary Studies*. 2022 https://doi.org/10.46827/ejls.v3i2.377.

[9]. Nimmanahaeminda, P. Water Lore: Thai-Tai Folk Beliefs and Literature. , 8, 27-39. 2005 https://doi.org/10.1163/26659077-00803003.

[10]. Oza, P. Folk Literature and the Rise of Vernaculars in India- Inferences and Analysis. *LIT: Post-Colonial Literature (Topic)*. 2020 https://doi.org/10.2139/ssrn.3670562.

[11]. Singaraja, R. Social Vision in Tamil Folklore. *International Research Journal of Tamil*. 2022 https://doi.org/10.34256/irjt22s237.

[12]. Sahay, S. THE FOLK TALES OF BIHAR: AN ANTHROPOLOGICAL PERSPECTIVE. *Folklore-electronic Journal of Folklore*, 13, 93-102. 2000 https://doi.org/10.7592/FEJF2000.13.BIHAR.

[13]. Smolyak, O., Smolyak, P., & Dovgan, O. The Image of Water in the Traditional Rituals and Folksongs of the Western Podolia. *Tautosakos darbai*, *58*, 207-227. 2019

[14]. Silvers, M. Birdsong and a song about a bird: Popular music and the mediation of traditional ecological knowledge in Northeastern Brazil. *Ethnomusicology*, 59, 380-397. 2015 https://doi.org/10.5406/ETHNOMUSICOLOGY.59.3.0380.

[15]. Ya-li, Y. The Folk Narrative in Traditional "Storage"——An Interpretation of Songs prayed for Rain within the Hangu Pass. *Journal of Baise University*. 2010

Cite this Article:

सुरेन्द्र सिंह, अंजना रत्नू, अनमोल सोनी. *(2026).* ***जल, स्मृति और संस्कृति: राजस्थान की लोक परंपराओं में जल का सांस्कृतिक भूगोल.*** *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), 4(4), 41–49.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i4.262*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.

© The Author(s) 2026. IJMRAST Published by Surya Multidisciplinary Publication.